अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2022) दिनांक : 20.12.2022

समय सीमा : 3 घंटा पंचम वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

नव पदार्थ–निर्जरा बंध मोक्ष–50

प्र. 1 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें– 16

निर्जरा–किसी चार प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) प्रायश्चित्त तप का एक प्रकार 'पारांचित' शब्द का क्या तात्पर्य है?

(ख) शुक्ल ध्यान का एक लक्षण 'अव्यथ' शब्द का अर्थ बताएं।

(ग) अनशन आदि प्रथम चार तपों में परस्पर क्या अंतर है?

(घ) अचक्षुदर्शनावरणीय कर्म के क्षयोपशम से क्या प्राप्त होता है?

(ङ) वेदना और निर्जरा का अंतर सिर्फ एक पंक्ति में ही बताएं।

(च) धर्म ध्यान के आलम्बन का संक्षिप्त वर्णन करें।

बंध–किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(छ) आत्मा के साथ बंधने वाले कर्म कितने प्रदेशी होते हैं व कितने स्पर्श वाले होते हैं?

(ज) अनुभाग बंध का संक्षिप्त वर्णन करें।

(झ) क्षेत्रावगाढ़ता किसे कहते हैं? संक्षेप में बताएं।

मोक्ष–किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(ञ) गृहस्थ वेश, अन्य तीर्थिक वेश, निर्ग्रंथ वेश व समुद्र में एक समय में कितने जीव सिद्ध हो सकते हैं?

(ट) लोकानुभाव का संक्षिप्त वर्णन करें।

(ठ) सिद्ध कहां जाकर स्थित होते हैं? और कहां शरीर छोड़ते हैं?

प्र. 2 निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें– 10

(क) **निर्जरा**–कायक्लेश को व्याख्यायित करें। ***अथवा*** आत्म शुद्धि हेतु किये गये तप से कर्मों का क्षय किस प्रकार होता है?

(ख) **बंध व मोक्ष**–द्रव्य बंध व भाव बंध को स्पष्ट करें ***अथवा*** सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्र व तप से सिद्धि क्रम किस प्रकार बनता है?

प्र. 3 निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार सहित लिखें– 24

(क) **निर्जरा**–सहज निर्जरा, सकाम निर्जरा, अकाम निर्जरा के स्वरूप का विवेचन करें। ***अथवा*** मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से आठ विशेष बोल उत्पन्न होते हैं? वर्णन करें।

(ख) **बंध व मोक्ष**–अनुभाव बंध और कर्म फल पर टिप्पणी लिखें। ***अथवा*** मोक्ष के अभिवचन लिखें व मोक्ष पदार्थ को व्याख्यायित करें।

अवबोध (तप धर्म से बंध व विविध तक)–30

प्र. 4 किन्हीं नौ प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्य में लिखें– 18

(क) क्या अंतराल गति में कर्म बंध होता है?

(ख) कायक्लेश व परिषह में क्या अंतर है?

(ग) कर्म का उदय चल रहा है, किंतु उसका बंध नहीं होता, ऐसा समय कभी आता है?

(घ) तप का क्या महत्त्व है?

(ङ) विनय किसे कहते हैं, उसके कितने प्रकार हैं?

(च) क्या जैन दर्शन पंचाग्नि तप को मान्यता देता है?

(छ) भावों की उत्कृष्ट निर्मलता व मलिनता के लिए क्या मजबूत संहनन अपेक्षित रहता है?

(ज) भवोपग्राही कर्म किसे कहते हैं?

(झ) पंचाग्नि तप करने वाले को तीव्र कष्टानुभूति होती है, फिर इसमें निर्जरा (धर्म) क्यों नहीं होती?

(ञ) क्या उदय के बिना बंधे हुए कर्म फल देते हैं?

(ट) उपशम में जब सर्वथा अनुदय है, फिर इसे कर्म की अवस्थाओं में कैसे लिया?

प्र. 5 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए– 12

(क) घातिक का अर्थ क्या है? घाति कर्मों में देशघाती कितने हैं और सर्वघाती कितने?

(ख) क्या कर्म आत्मा के सभी प्रदेशों के बंधते हैं और जब कर्म वर्गणा का बंध होता है, वे एक कर्म से संबंधित होती है या आठों कर्मों से?

(ग) सात कर्मों का बंध प्रति समय माना है, क्या सात कर्मों की सभी उत्तर प्रकृतियों व बंध भी समय-समय होता है? तथा नाम कर्म के उदय से पुण्य का बंध होता है, चौदहवें गुणस्थान में नाम कर्म का उदय चलता है, फिर वहां कर्म का बंध क्यों नहीं होता?

(घ) क्या तप के कई प्रकार हैं? क्या मिथ्यात्वी की तपस्या संसार वृद्धि का कारण है?

श्रावक संबोध–20

प्र. 6 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 8

(क) धर्म का मर्म समझने वाली भगवान महावीर की श्राविका का नाम क्या था? वह किस नगरी के राजा की पुत्री व बहन थी?

(ख) भगवान महावीर की परम उपासिका किस ग्राम की रहने वाली थी? उसने भगवान के लिए कौन सा पाक बनाया था व दूसरा पाक उसने किसके लिए बनाया था?

(ग) उपसंपदा का एक प्रकार 'सम्मतं उवसंपज्जामि' का अर्थ लिखें।

(घ) 'धर्मवृत्तिकार', 'धर्मख्याति', 'सहायनपेक्षी' व 'धर्मप्रलोकी' का अर्थ बताएं।

(ङ) आनंद श्रावक किस ग्राम व किस सन्निवेश का रहने वाला था? उसकी पत्नी का नाम व उसकी सम्पत्ति का वर्णन करें।

(च) संयम साधना में रत मुनियों को निवास स्थान देने वाला व्यक्ति उन्हें क्या प्रदान करता है?

प्र. 7 कोई चार पद्य लिखें– 12

(क) जैन संस्कृति का एक अनुष्ठान–रात्रि भोजन विरमण है–वाला पद्य लिखें।

(ख) आस्था के क्षेत्र में श्रावकों की दृढ़ता के अनोखे उदाहरण–वाला पद्य लिखें।

(ग) ऐसे श्रावक जिन्होंने संघ की एकता व अखंडता को पोषण दिया–वह पद्य लिखें।

(घ) भगवान महावीर के उत्तराधिकारी गणधर सुधर्मा बने–वह पद्य लिखें।

(ङ) श्रावक अपने जीवन में शिष्टता, संयम और अहिंसा के संस्कारों को पुष्ट करें–वह पद्य लिखें।

(च) जैन परम्परा में गुरु वंदन की विधि पंचांग प्रणति के रूप में मान्य है–उस पद्य को लिखें।